चतुर्थ अध्याय

विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

"विवेच्या कहानियो का शिल्पगत अध्ययन"

४.१ शिल्प

किसी भी रचनाकार की सफलता एक ओर उसके चुने गए कथ्य की विशेषताओं पर निर्भर रहती है, तो दुसरी ओर उसके शिल्प – संयोजन को श्रेष्ठ स्थान होता है। साहित्य जगत में अनेक विधाएँ मिलाती है। सभी विधा के कुछ तत्व होते हैं। कहानी जीवन का ही एक रुप होती है। कहानी की कथा का निर्माण सामाजिक घटनाओं से संबंधीत होता है। उन घटनाओं को कहानी के पात्र प्रभावी रुप में प्रस्तुत करते हैं। अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं। अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए उचित भाषा का प्रयोग किया जाता है। कहानी को प्रभावशाली बनाने के लिए शैली का प्रयोग करते हैं। कहानी की घटित घटनाएँ किसी – न – किसी समय या किसी – न – किसी स्थान पर घटित होती हैं। इसी स्थान, समय को देश काल और वातावरण करते हैं। कहानी के शीर्षक से कहानी का सार रुप सामने आता हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि कहानी का निर्माण उपर्युक्त तत्वों के आधार पर होता है। कहानी में तत्वो का प्रयोग करना रचनाकार पर निर्भर रहता है। साहित्यकार की सफलता या असफलता शिल्पगत भेद से ही उत्पन्न होती हैं। आंतरिक और बाहय् यह शिल्प के दो पक्ष होते हैं। ये दोनो पक्ष महत्वपुर्ण होते हैं। आदर्श सक्सेना इस संदर्भ में लिखते है – "शिल्प उसी वक्त सार्थक बनता है, जब साहित्यकार के अंदर के भाव वह शिल्प के बाहय तत्त्वों, भाषाशैली, शब्द, वाक्य, अलंकार आदि के आधार पर सरलता से प्रकट होते हैं। साथ ही शिल्प का बाहय् पक्ष भी महत्वपुर्ण होता है क्योंकि बाहय् पक्ष के के आधार पर ही उसके अंदर के भाव को उद्धृत करता रहता है।"१ शिल्प रचना का बाहय ढाँचा उसे कलात्मक रुप में प्रस्तुत करता है। इससे रचना

---

१. आदर्श सक्सेना – हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प -- विधि, पृ. ४८

सफल हो जाती है। जयशंकर प्रसाद ने काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास साहित्य में पर्याप्त लेखन किया है। प्रसाद की कहानियों को समझने के लिए शिल्पगत अध्ययन आवश्यक है। इसलिये पहले शिल्प का स्वरुप, शिल्प का महत्व आदि बातों को जानना। महत्त्वपुर्ण है। तभी कहानिंयो का शिल्पगत अध्ययन उचित हो सकेगा। अत: शिल्प का स्वरुप और शिल्प का महत्त्व प्रस्तुत है।

४.१.१ शिल्प का स्वरुप

शिल्प के माध्यम से रचनाकार अपने विषय को मूर्त रुप दे सकता है, उसका अर्थबोध करता है। उसे कलात्मक रुप में अभिव्यक्त करता है। शिल्प इस शब्द के लिए हिंदी भाषा में कई शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे – शिल्प , शिल्प – विधान, शिल्प विधि आदि। अंगेजी भाषा में भी शिल्प इस शब्द के लिए कई शब्द मिलते हैं। जैसे–क्राफ्ट, टेकनीक, आर्ट आदि। इन सभी शब्दों मे अंगेजी के टेकनीक (Technique) शब्द का प्रयो किया जाता है। क्योंकि 'टेकनीक या शिल्पविधी' शब्द का शाब्दीक अर्थ किसी के बनाने या रचने का ढ़ंग अथवा तरीका है। किसी भी वस्तु को बनाने के लिए जो विधियाँ और प्रक्रिया होती हैं उनके एकत्रीकरण को शिल्पविधि के नाम से जाना जाता हैं कोई भी रचनाकार अपने विचारों को सही तरीके से अभिव्यक्त करने के लिए और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए शिल्पविधि का प्रयोग करता हैं। इस बारे में डॉ. पांडुरंग पाटील कहते हैं – "परंपरागत रुपाकारों से मुक्त होने की ललक, नवोन्मेषशालिनी शक्ति, निजी स्वभाव, संस्कार, रुचि एवं अध्ययन आदि कारणों से ही रचनाकार परिवर्तित विषयों को सुचारु रुप से निर्वाह करने में प्रयत्नशील रहता है। युग में परिस्थितियों के साथ तादात्म्य रखते हुए शिल्प संबंधी नए–नए प्रयोग होते रहते हैं। युग परिवर्तन के साथ – साथ जीवनमुल्यों में भी बदलाव आए, जीवनविषयक धारणाएँ भी बदल गई।

इस परिवर्तित जीवन – सत्य की उचित अभिव्यक्ति के लिए भी रचनाकार को नई शिल्प विधियों का अत्मय लेना पड़ा।"१

इस प्रकार रचनाकार शिल्पविधी के द्वारा अपनी भावनाओं को सही ढ़ंग से व्यक्त करता हैं।

४.१.२. शिल्प का महत्त्व –

साहित्यकार को अपनी रचना का निर्माण करते समय शिल्प का प्रयोग करना पड़ता है। शिल्प के बिना किसी भी रचना का निर्माण संभव नहीं हो सकता। शिल्प के प्रयोग से ही रचनाकार के लक्ष्य की पुर्ति होती है। इससे महाकाव्य, खंड़काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास के बीच का अंतर समझ पाते हैं। साहित्य के प्रकारों को शिल्प के आधार पर ही समझा जाता है। शिल्प साहित्य में विविध रुपों में देखने को मिलता है। शिल्प का विकास साहित्य में विविध अंगो से हुआ है। शिल्प का यह विकास प्रतिभासंपन्न साहित्यकारों की देन है। इसके बारे में महेशचंद्र शर्मा लिखते हैं – "रचना का आद्योपांत प्रबंध अथवा संयोजन। किसी भी रचना का आरंभ से लेकर अंत तक कौशल्यपूर्ण संयोजन व्यवस्था अथवा प्रबंध 'शिल्प–विधान' कहलाता है।"२ शिल्प ही रचनाकार की रचना को सफल बना देता है।

उपरयुक्त विवेचन से साहित्य में शिल्प – विधि का महत्व स्पष्ट होता है। रचना में शिल्प का अति प्रयोग न हो यह साहित्यकार को ध्यान में रखना चाहिए। शिल्प के ज्यादा प्रयोग से रचनाकार की रचना असफल बन सकती है। इसलिए सभी रचनाकार को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। शिल्प के उचित प्रयोग से ही रचना सफल बनती है।

विवेच्या कहानियों में शिल्पविधि –

विवेच्या कहानियो का शिल्पगत अध्ययन करते समय कहानी के प्रमुख तत्वों को देखना आवश्यक है। कहानी के प्रमुख तत्त्व – कथावस्तु, पात्र,

---

१. डॉ. पांडुरंग पाटील – देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य– पृ. १९२
२. डॉ. दयाकृष्ण विजय – मधुमती, अंक ११,३० नवंबर, १९९१, पृ. ८

चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण, भाषाशैली और शीर्षक माने हैं। इन तत्वों के आधार पर 'आकाश – दिप' में निहित कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत किया हैं।

विवेच्या कहानियों मे कथावस्तु का मुल्यांकन –

हिंदी साहित्य के कहानीकारों में प्रसाद का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रसाद की कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें सामाजीक जीवन, त्याग और समर्पण पूर्ण प्रेम, देश की संस्कृति की पहचान मिलती है। प्रसाद के 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह को हमने लघु–शोध प्रबंध के रुप में लिया है। इस कहानी संग्रह में कुल १९ कहानियाँ हैं। इसका अध्ययन प्रस्तुत किया है।

कथावस्तु कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। लेखक अपनी कथावस्तु साहित्य, समाज, इतिहास, जीवन की घटनाएँ तथा कल्पना के आधार पर प्राप्त करता है। कहानी की कथावस्तु जीवन के यथार्थ से जुड़ी होनी चाहिए। उसमें कौतुहल, करुणा, संवेदना, संघर्ष, प्रभावात्मकता, स्वाभाविकता, रोचकता का होना आवश्यक है। कहानी में वस्तु तत्त्व का जो महत्त्व होता है यह जानना आवश्यक है।

४.२ कहानी में कथावस्तु का महत्त्व –

कहानी में कथावस्तु का महत्त्वपुर्ण स्थान होता है। कथावस्तु के बिना कहानी की रचना संभव नहीं होती। कहानी में वस्तुतत्व का महत्त्व प्रतिपादित करते समय डॉ. प्रतापनारायणस टंडन बताते हैं – "कथावस्तु का कहानी मे एक मूल उपकरण के रुप में तो सर्वाधिक महत्त्व है ही, कहानी की रचना का आधार होने के कारण भी इसका विशिष्ट स्थान है। भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से कहानी के स्वरुप पर विचार करते हुए कथावस्तु को ही प्रधानता दी है। यें तो कहानी की रचना में उसकी संभावना नहीं होती।

सामान्य रुप से कथावस्तु का अपेक्षित महत्त्व इस कथ्य से निर्धारीत होता है कि उसमें वर्णित जीवन खंड का कहानीकार को कितना प्रखुर अनुभव है। "१ कहानी की कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव से संबधीत होती है। कहानी में कथावस्तु अत्यंत व्यापक होती है। इस बारे में ड़ॉ. सुरेश सिन्हा कहते हैं – "कहानी में जो भी विषय लिया जाए उसका स्वरुप इस प्रकार का होना चाहिए कि उसे कम – से – कम समय में अपनी पुर्णता के साथ अभिव्यक्त किया जा सके। "२ कहानीकार कहानी में. अपने जीवन में आए अनुभवों को व्यक्त करता है। इस बारे में ड़ॉ. रघुवीर दयाल वार्ष्णेय का यह कथन है – "कहानी भोगे हुए क्षणों की अभिव्यक्ति का माध्यम है।"३

कहानी में. प्रथम पात्रों का परिचय और घटनाओं का परिचय दिया जाता है। कहानी का उद्देश्य भी स्पष्ट किया जाता है। कहानी के मध्य में समस्या का विस्तार स्पष्ट किया जाता है। कथावस्तु का मध्यभाग कहानी का विकास भाग होता है। अंत में कौतुहल तथा कहानी का पूर्ण अभिप्राय स्पष्ट होता है। इसप्रकारे कहानी में कथावस्तु का महत्त्व अनन्य साधारण है।

४.२.१ कथावस्तु की प्रधानता तथा अनिवार्यता –

कथावस्तु कहानी का प्रमुख तत्व है। यह तत्व कहानी में सर्वाधिक महत्त्व रखता है। कहानी सफल होने के लिए कथावस्तु का चुनाव सहि ढ़ंग से होना चाहिए। कहानी का मुलाधार कथावस्तु होती है। ड़ॉ. प्रतापनारायण टंडन कहते हैं– "व्यावहारिक दृष्टिकोण से कहानी की कथावस्तु प्राय: एक सूत्री ही होती है, यदि उसकी कथावस्तु बहुसूत्री होती है, तो वह विश्रृंखलित – सी हो जाती है और संगठनात्मकता की दृष्टि से कहानी सदोष हो जाती है। एकसुत्री

---

१. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – हिंदी कहानी कला, पृ. २८८
२. डॉ. सुरेश सिन्हा – हिंदी कहानी उद्भव और विकास, पृ. ३७
३. डॉ. रघुवीर दयाल वार्ष्णेय – हिंदी कहानी : बदलते प्रतिमान, पृ. ९

कथावस्तु मे पर्ण्य विषय का प्रस्तुतीकरण अपेक्षाकृत अधिक कलात्मकना के साथ संभव होता है। परंतु प्रत्येक स्थिति में किसी भी कहानी में कथावस्तु का होना अनिवार्य है और वही कहानी का प्रधान तत्व है।"१

४.२.२. विवेच्या कहानियों की कथावस्तु –

जयशंकर प्रसाद की कहानियों पर विचार किया जाय तो उनकी कहानियों मे शिल्पविधि का पूर्ण प्रयोग हुआ है। कहानियों के माध्यम से जैसे घटना और चरित्रो के मध्यम से मुख्य विचारों को पाठकों तक पहुँचाया जाता है। कहानी में अलग–अलग शैलियों का भी प्रयोग किया जाता है।

कथावस्तु:

विवेच्या कहानियों की कथावस्तु अध्याय क्र. २ में दि गई है।

४.३ पात्र एवं चरित्र – चित्रण –

प्रस्तावना –

कहानी का संबंध मनुष्य के जीवन से संबंधीत होता है। इसी कारण कहानी के पात्र भी सामाजिक जीवन से जुड़े हुए होते है। इसलिए सफल चरित्र–चित्रण के लिए मानव चरित्र का सूक्ष्म अध्ययन करना आवश्यक है। चरित्र –चित्रण के संबंध में. ड़ॉ. आशा गुप्ता का मत है – "कहानी में चरित्र –चित्रण करना कठिन कार्य है। संक्षिप्तता इस कठिनाई की जड़ है। तथापि लेखक सीमा में. ही चरित्र को इस रुप में चित्रित करता है, जिस पर उस चरित्र का समस्त जीवन चलित होता हैं। "२ इस कथन को सफल बनाने का कार्य प्रसाद ने स्वाभाविक रुप से किया है। चरित्र – चित्रण में प्रमुख पात्रों के साथ–साथ सहायक पात्रों का भी चित्रण प्रभावपूर्ण ढ़ंग से किया है।

---

१. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – हिंदी कहानी कला, पृ. २८९
२. डॉ. आशा गुप्ता – हिंदी कथांजली, पृ . ५

विवेच्या कहानियों का चरित्र–चित्रण करने से पहले चरित्र–चित्रण क्या है? और कहानी में उसका योगदान कितना महत्त्वपूर्ण है? यह देखना जरुरी है। आज चरित्र–चित्रण का महत्त्व बढ़ने के कारण उसका स्वरुप समझ लेना जरुरी है।

४.३.१ चरित्र–चित्रण का स्वरुप –

कहानी में कथावस्तु को पहले महत्त्व दिया जाता है और बाद में चरित्र–चित्रण को महत्त्व दिया जाता है। कहानी में कहानीकार जो पात्र दिखाता है वह मानवी जीवन से जुड़े हुए होते है। इसी आधार पर कहानीकार मानव चरित्र का बहुपक्षीय रुप चित्रित करता है। डॉ. गुलाबराय कहानी में चरित्र–चित्रण का महत्व बताते हुए कहते है कि– "आजकल कथानक को उतना महत्त्व नहीं दिया जात, जितना कि चरित्र–चित्रण और भावाभिव्यक्ति को। चरित्र–चित्रण का संबंध पात्रो से है। कहानी में पात्रो के चरित्र का पूर्ण विकासक्रम नहीं दिखाया जाता, वरन् प्राय: बने बनाए चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश ड़ाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे।"१

४.३.२ कहानी में चरित्र–चित्रण का महत्त्व –

आज के साहित्य में चरित्र–चित्रण का महत्त्व के बारे में. डॉ. प्रतापनारायण टंडन ने बताया है कि – " चरित्र–चित्रण कहानी का एक महत्त्वपुर्ण तत्व है। इस तत्व के अंतर्गत कहानी के पात्रों की भावात्मक, बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानकि प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं की अभिव्यंजना होती है। सैद्धांतिक रुप में जहाँ पर यह तत्व एक कहानी की कलात्मक उत्कृष्ठता का द्योतक होता है, वहाँ व्यावहारिक दृष्टि से यह कहानी के उद्देश्य और उदात्ती कृत आदर्श का प्रस्तुतीकरण भी करता है। कहानी मे पात्र योजना संदर्भ में

---

१. डॉ. गुलाबराय – काव्य के रुप, पृष्ठ – २२१

एक बात सबसे अधिक ध्यान में रखने योग्य है कि उसमें यथा संभव किसी एक पात्र के ही जीवन की किसी घटना विशेष की कलात्मक अभिव्यंजना होनी चाहिए।" १

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में चरित्र–चित्रण –

'आकाश दिप' कहानी संग्रह की कहानिओ का अध्ययन करते समय कहानी के प्रमुख पात्रों पर प्रकाश ड़ालना जरुरी है। वैसे ही गौण पात्र भी आए हैं। इन सभी पात्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

४.३.३ प्रमुख पुरुष पात्र –

विवेच्या कहानियों मे आए प्रमुख पुरुष पात्रों का चित्रण निम्नलिखित है।

बुध्दगृप्त –

बुध्दगुप्त 'आकाश दीप' कहानी का प्रमुख पात्र है। बुध्दगुप्त नाव पर बंदी होता है लेकिन चम्पा की सहायता से आजाद होता है। बाद में वह नौका का स्वामी बन जाता है। बुध्दगुप्त चम्पा से प्रेम करता है। लेकिन चम्पा उसे अपने पिता का हथियारा समझती है। इसलिए उससे शादी नही करती। बुध्दगुप्त अपना सच्चा प्यार चम्पा के सामने व्यक्त करता है कि – "आह चंपा, तुम कितनी निर्दय हो! बुध्दगुप्त को आझा देकर देखो तो वह क्या नहीं कर सकता। जो तुम्हारे लिए नये व्दीप की सृष्टि कर सकता है, नई प्रजा खोज सकता है, नये राज्य खोज सकता है, उसकी परीक्षा लेकर देखो तो ..... । कहो, चंपा !"२ चम्पा उसका स्विकार नहीं करती। बुध्दगुप्त स्वदेश लौट जाता है।

---

१. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – हिंदी कहानी कला, पृ. ३३०

२. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. १३

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में बुध्दगुप्त के सच्चे प्रेम के दर्शन होते। चम्पा के प्रति उसका प्रेम एकनिष्ठ होता है। बुध्दगुप्त का प्रेम त्याग और समर्पण पूर्ण प्रेम है।

चंद्रदेव –

चंद्रदेव 'सुनहला साँप' कहानी का प्रमुख पात्र है। चंद्रदेव ताल्लुकेदार का पुत्र था। अपने मित्र देवकुमार के साथ मसुरी में घुमने गया था। वहाँ पर उसकी मुलाकात नेरा से होती है वह उसे एकटक देखता ही रहता है। नेरा भी साँप पकड़ने का काम करती है। चंद्रदेव अपने नौकर रामू को शीशे का बक्सा नेरा को देने के लिए करता है। रामू नेरा को देने के लिए कहता है। रामू नेरा के प्यार में कब खो जाता है इस बात का पता चंद्रदेव को भी नही होता। चंद्रदेव सोचता है कि – "सच तो, क्या मैं अपने को भी पहिचान सका?"१

इसप्रकार देखते है कि, चंद्रदेव पहली नजर मे नेरा के प्यार में खोज जाता है। लेकिन उसका यह प्रेम सफल नहीं होता क्योंकि नेरा उससे प्रेम नहीं करती। इसमें चंद्रदेव का असफल प्रेम दिखाया है।

पथिक :

पथिक 'हिमालय का पथिक' कहानी का प्रमुख पात्र है। पथिक हिमालय का सौन्दर्य देखने के लिए निकल पड़ता है। पथिक की मुलाकात किन्नरी और वृध्द से होती है। पथिक किन्नरी से प्रेम करता है। जब वह फूलो की माला किन्नरी के बालों में ड़ालता है तो वृध्द क्रोधित हो जाता है। पथिक से कहता है तुमने यह गलत किया। तब पथिक बताता है– "मैने देवता के निर्माल्य को और भी पवित्र बनाया है। उसे प्रेम के गंथजल से सुरभित कर दिया है। उसे तुम देवता को अर्पण कर सकते हो"२ कहकर पथिक चला जाता है। किन्नरी भी उसके साथ जाती है। दोनो बर्फ में समा जाते है।

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ४१
२. वही – पृ. क्र. ४५

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में पथिक का प्रकृति के प्रती प्रेम नजर आता है। पथिक किन्नरी से प्रेम करता है लेकिन सफल नही होता। सच्चे प्रेमी जीवित होकर नहीं मिले लेकिन मरने के बाद मिल जाते है यह अलौकिक प्रेम दिखाया है।

निर्मल :

निर्मल 'भिखारिन' कहानी का प्रमुख पात्र है। जिसके दिल मे गरिब लोगों के प्रति दया, प्रेम और सहानुभूती है। यह प्रस्तुत कहानी में दिखाया है। निर्मल जब चौदह बरस की भिखारिन को भीख मांगते देखता है तो अपनी माँ से उसे कुछ देने के लिए कहता है। लेकिन माँ कुछ भी नहीं देती। निर्मल उसे घर काम के लिए रखने को कहता है लेकिन माँ इन्कार करती है। निर्मल जब अपनी भाभी के साथ गंगा तह पर आता है तब फिर उसे वह भिखारिन नजर आती है। वह भीख मांगती है। निर्मल अपनी भाभी से कहता है कि, वह भिखारिन से शादी करना चाहता है। निर्मल की बात सुनकर भाभी चकित हो जाती है। तब भिखारिन कहती है, दोन दिन से खाने के लिए कुछ मांग रही हुँ तो नहीं मिला, ब्याह करना तो अलग बात है।

इसप्रकार देखते है कि, प्रस्तुत कहानी में निर्मल एक अच्छे परिवार का लड़का होने के बावजूद भी एक भिखारीन से शादी करना चाहता है। यहाँ पर निर्मल के स्वभाव की उदारता नजर आती है।

रसदेव :

रसदेव यह 'कला' कहानी का प्रमुख पात्र है। रुपनाथ, रसदेव और कला एक साथ पढ़ते थे। पढ़ाई पूरी होने के बाद तिनों अलग हो जाते है। रसदेव कला से प्यार करता है। कला से दूर होकर उसकी याद में कविता करने लगता है। चित्र की प्रदर्शनी में तिनो फिर मिलत है। कला रसदेव को अपना जीवन साथी चून लेती हे।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में रसदेव का सफल प्रेम नजर आता है। रसदेव कला के प्रति एकनिष्ठ है इसका चित्रण मिलता है। आखीर सच्चे प्रेम की जीत होती है यह दिखाया है।

अशोक :

अशोक 'देवदासी' कहानी का प्रमुख पात्र है। अशोक पुस्तकें बेचने का काम करता है। प्राचीन भारतीय मंदिरो को देखकर प्रसन्न हो जाता है। अशोक की मुलाकात पद्मा से होती है। पद्मा देवदासी होती है। अशोक सारी हकिकत पत्र लेखकर अपने मित्र रमेश को बताता है। पद्मा का रुप –सौंदर्य देखकर अशोक उसके प्रति आकर्षित हो जाता है। एकदिन अशोक और पद्मा को पाना चाहता है। एकदिन अशोक और पद्मा पहाड़ी पर बैठते है। तब रामस्वामी वहाँ पर आ जाता है। दोनों के झगड़े में रामस्वामी पहाड़ी से निचे गीर जाता है। अशोक पद्मा से शादी करके उसे सौभाग्य भरी जिदंगी देना चाहता है। वह पद्मा से कहना चाहता है कि, "मैं तुम्हारा प्रेमी हूँ। तुम मेरे लिए सुहागिनी के कुंकुम–बिंदू के समान पवित्र, इस मंदिर के देवता की तरह भक्तिकी प्रतिमा और मेरे दोनों लोक की, निगूढ़तम आकांक्षा हो।"१ लेकिन अशोक कुछ भी कह नहीं पाता।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के माध्यम से दिखाया है कि अशोक एक देवदासी को सौभाग्य भरी जिंदगी देकर समाज में उसे स्थान देना चाहता है। अशोक का प्रेम सच्चा और एकनिष्ठ होता है। यह कहानी के माध्यम से दिखाया है।

राजकुमार सुदर्शन –

सुदर्शन 'समुद्र–संतरण' कहानी का प्रमुख पात्र है। सुदर्शन एक राजकुमार है। महल से निकल कर प्रकृति का सौन्दर्य देखने में मग्न होता है।

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ६९

वही पर सुदर्शन की मुलाकात एक धीवर बाला से होती है। धीवर बाला मछली पकड़ने का काम करती है। राजकुमार और धीवर बाला की पहचान हो जाती है। दोनों एक – दूसरे का परिचय देती है। राजकुमार को सेवक लेने आते है लेकिन वह बताता है कि, मेरा कुछ खो गया है और नहीं जाता। धीवर–बाला सुदर्शन को अपने साथ ले जाती है।

इसप्रकार सुदर्शन एक राजकुमार होने के बावजूद भी एक साधारण लड़की से प्रेम करता है। सुदर्शन अपना राज–वैभव त्यागकर गरिब धीवर–बाला के साथ रहना चाहता है। उसका प्रेम सफल प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

वैरागी –

'वैरागी' कहानी में वैरागी का चित्रण किया है। वैरागी संसार की सभी भौतिक सुख–सुविधाओ को त्यागकर वैराग धारण करता है। वैरागी एक झोपड़ी मे रहकर ब्रम्हचर्य और साधना करता है। वैरागी आश्रय मांगने के लिए आयी स्त्री को आश्रय देता है। स्त्री उसे बताती है तुमने वैराग्य धारण किय तो झोपड़ी के प्रति मोह क्यों है? वैरागी की आँखे खुल जाती है और वह चला जाता है।

इसप्रकार वैरागी का भारतीय संस्कृति में महत्त्वपुर्ण स्थान है। वैरागी को किसी भी चिज का मोह नहीं करना चाहिए यह प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

नंदू –

नंदू 'बनजारा' कहानी का प्रमुख पात्र है। नंदू बनजारा है। व्यापार करने के लिए वह घूमता रहता है। एकदिन ड़कैती ड़ाका ड़ालते है ड़र से नंदू पहाड़ी से गिर जाता है। घायल नंदू की देखभाल मोनी करती है। मोनी नंदू से प्यार करने लगती है। चौकीदार मोनी पर झुठा इल्जाम भी लगता है। ठिक होने के बाद नंदू वहाँ से चला जाता है। कई दिन बीत जाने पर फिर नंदू उसी

जगह वापस आता है। नंदू मोनी से मिलता है। लेकिन वह निराश हो जाता है। मोनी उसका स्विकार नहीं करती।

इसप्रकार कहानी में नंदू एक व्यापारी होता है। मोनी उससे प्यार करती है तब नंदू उसे अपनाता नहीं है। जब मोनी को वह अपनाने के लिए आता है तब निराश हो जाता है। नंदू का असफल प्रेम प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

सरकार विजयकृष्ण –

सरकार विजयकृष्ण 'चूड़ीवाली' कहानी का प्रमुख पात्र है। सरकार अपनी पत्नी के साथ गृहस्थी में मग्न होते है। चूड़ीवाली सरकार से प्रेम करती है। मगर सरकार इस बात को स्विकार नही करते। कुछ ही सालों मे सरकार की पत्नी का देहांत हो जाता है। चूड़ीवाली अपने प्रेम के बारे में कहती है तो सरकार स्पष्ट कहते है – "मैं वेश्या की दी हुई जीविका से पेट पालने में असमर्थ हूँ।"१ यह कहकर सरकार चले जाते है। एकदिन थके हुए सरकार को चूड़ीवाली के यहाँ आश्रय मिलता है। लेकिन सरकार इस बात को जानते नहीं थें। बाद में सरकार को पता चलता है कि, चूड़ीवाली सरकार से मिलें पैसो से अच्छी जिंदगी जी रही है। सरकार को उस पर गर्व होता है। आखिर दोनों एक – दुसरे का सहारा बनकर रह जाते है।

इसप्रकार सरकार विजयकृष्ण के उदार स्वभाव का दर्शन होता है। चूड़ीवाली का एकनिष्ठ प्रेम देखकर सरकार समाज के बारे मे नही सोचते वह उसका सहरा बन जाते है। सरकार के चरित्र को प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट किया है।

राजा :

राजा 'अपराधी' कहानी का प्रमुख पात्र है। जंगल मे राजा की मुलाकात कामिनी से हो जाती है। कामिनी के प्रति वह आकर्षित हो जाता है। कामिनी राजा के हवस का शिकार हो जाती है। राजा से कामिनी को पुत्र प्राप्ति हो

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ८५

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY KOLHAPUR

जाती है। राजा अपने महल में पत्नी और पुत्र के साथ खुश रहता है। एकदिन राजा फिर उसी जंगल में आता है। राजा पुत्र को धुर्नविदया सिखाना चाहता है। लेकिन गलती से कामिनी पुत्र का तीर राजा के पुत्र को लगने से उसकी मौत हो जाती है। तब राजा सैनिकों को आदेश देता है कि उसे मार ड़ालो। दोनों पुत्रों की मौत हो जाती है। रोती हुई कामिनी से पता चलता है कि, वह राजा का पुत्र था।

इसप्रकार राजा अपने दोनो पुत्र खो देता है। कामिनी और उसके पुत्र को अच्छी जिदंगी नहीं दे सका। कामिनी के प्रति उसका व्यवहार गलत होता है। इसीतरह राजा के चरित्र – चित्रण को कहानी में स्पष्ट किया है।

एकांतवासी –

एकांतवासी 'प्रणय– चिन्ह' कहानी का प्रमुख पात्र है। वह अपनी प्रेमिका से दूर एकांत में रहता है। लेकिन अपनी प्रेमिका के विचार उसके मन में रहते है। एकांतवासी संसार से घबराकर एकांत में रहना चाहता है। उसकी मुलाकात सेवक से होती हे। सेवक के द्वारा वह अपनी प्रेमिका को संदेश भेजता है। संदेश मिलने के बाद प्रेमिका उसे मिलने आती है। वह प्रेमिका से चिहन् की मांग करता है। लेकिन वह पुरस्कार के रुप में सेवक को देती है। प्रेमिका एकांतवासी को समझाकर उसे वापस संसार में ले जाती है।

इसप्रकार कहानी में एकांतवासी अकेला रहना चाहता है। वह अपनी प्रेमिका से बहुत प्यार करता है। वही प्यार उसे वापस जीने के लिए प्रेरित करके संसार में ले जाता है। एकांतवासी का सफल प्रेम प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

युवक शैलनाथ –

युवक शैलनाथ 'रुप की छाया कहानी का प्रमुख पात्र है। भटके हुए शैलनाथ को सरला अपना पति समझकर आश्रय देती है। उसे पिछली बातों का स्मरण देती है। सरला उसे कहती है कि, वह उसका पति है। लेकिन शैलनाथ

को कुछ याद नहीं आता है। सरला उसे अपनाने के लिए कहती है। शैलनाथ इसे पाप समझकर वहाँ से चला जाता है।

इसप्रकार शैलनाथ सरला के प्रेम को स्वीकार नहीं करता। शैलनाथ अगर गलत होता तो उसे अपनाला लेकिन यहाँ उसके स्वभाव की उदारता स्पष्ट होती है।

साहसिक –

साहसिक युवक 'ज्योतिष्मती' कहानी का प्रमुख पात्र है। एकदिन उसकी मुलाकात वनलता से हो जाती है। जो ज्योतिष्मती फूल की तलाश कर रही थी। साहसिक वनलता की मदद करना चाहता है। वन में ज्योतिष्मती का फूल उन्हें नजर आता है। लेकिन उस फूल को पवित्र प्रेमी ही छू सकता है यह बात वनलता उसे बताता है। युवक के करिब जाने से फूल मेघ में विलीन हो जाता है।

इसप्रकार युवक अपने काम में सफल नहीं होता यह कहानी में दिखाया है।

साजन –

साजन 'रमला' कहानी का प्रमुख पात्र है। साजन शारीरिक और मानसिक जरुरतों को भूलकर जलदेवता के समान झील के किनारें पड़ा रहता है। साजन घूमने निकलता है तब उसकी मुलाकात रमला से हो जाती है। रमला बहुत दिनों तक साजन के साथ रहती है। साजन रमला को अपनी समजने लगता है। रमला को देखकर साजन के मन की सोई वासनाएँ जाग जाती है। एकदिन घूमते – घूमते दोनों गाँव में पहूँचते है। रमला को वहां पर छोड़कर साजन चला जाता है।

इस प्रकार साजन का प्रेम असफल हो जाता है। साजन अपनी पिछली जिंदगी में वापस चला जाता है। यह प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

युवक –

युवक 'बिसातो' कहानी का प्रमुख पात्र है। यह युवक पीठ पर सामान बादकर बेचता है। शीरीं के स्वप्न में वह युवक आता है। शीरीं उसका बोझ कम करना चाहती है। सरदार अपनी प्रेयसी के लिए युवक से सामान खरेदना चाहता है। सरदार उससे दाम पूछता है। तब युवक कहता है – "मैं उपहार देता हूँ। बेचता नहीं। ये विलायती और कश्मीरी सामान मैंने चुनकर लिए हैं। इनमें मूल्य ही नहीं, हदय भी लगा है। ये दाम पर नहीं बिकते।"१ सरदार को गुस्सा आ जाता है। युवक सरदार के यहाँ आराम कर के, अपना सामान वहीं पर रखकर चला जाता है।

इसप्रकार युवक और शीरीं का प्रेम सफल नहीं होता.

४.३.४ प्रमुख नारी पात्र –

समाज में नारी का स्थान ऊँचा है। नारी के कई रुप होते है। माता, पत्नी, पुत्री, बहन, प्रमिका के रुप होते है। माता, पत्नी, पुत्री, बहन, प्रेमिका के रुप में अपना कर्तव्य निभाती है। जयशंकर प्रसाद के 'आकाश दीप' कहानी संग्रह में नारी को अलग – अलग रुपो में दिखाया है। प्रसाद नारि को श्रेष्ठ मानते है। इसलिए प्रसाद की कहानियों में नारी को ज्यादा महत्त्व दिया है।

चंचा –

'आकाश दीप' कहानी में चंपा नायिका के रुप में चित्रीत कि गई है। चंपा नाव पर बंदी होती है। अपनी कुशलता से वह आजाद होती है और बुध्दगुप्त को भी आजाद करीत है। चंपा अपने बंदी होने का कारण बतार्ति है। चंपा और बुध्दगुप्त दोनो एक – दुसरे से प्यार करते है। लेकिन चंपा अपने पिता का हथियारा दस्यू बुध्दगुप्त को समझती है। चंपा क्षत्रिय युवती है। प्रेम

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ११५

होकर भी चंपा उसे अपनाती नहीं। बुध्दगुप्त उसे समजाता है कि, वह उसके पिता का हथियारा नहीं है। चंपा कहती है – "यदि मैं इसका विश्वास कर सकती। बुध्दगुप्त, वह दिन कितना सुंदर होता, वह क्षण कितना स्पृहणीय! आह! तुम इस निपठुरता में भी कितने महान् होते!"१ चंपा अपने मन के शक के कारण अपने प्रेम का स्विकार नहीं करती। चंपा उसी व्दीप पर दुसरों की सेवा करने के लिए रह जाती है।

इसप्रकार चंपा के त्याग और समर्पण पूर्ण प्रेम का चित्रण होता है। दीप जैसे खुद जलकर दुसरों को प्रकाश देता है उसी तरह दीप की भाँति चंपा जलकर दूसरों को प्रकाश देती है यह प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है।

ममता –

'ममता' कहानी की ममता एक विधवा युवती है। ममता के पिता की मौत हो जाने पर वह अकेली रह जाती है। ममता एक झोपड़ी में रहती है। एकदिन मुघल उसे पास आश्रय मांगता है। ममता न चाहते हुए भी भारतीय परंपरा के अनुसार अतिथी को भगवान का रुप समझकर आश्रय देती है। वह हुमायूँ बादशहा था। बादशहा के कहने पर उसका पुत्र ममता की जगह में अष्टकोण मंदिर बनवाता है।

इसप्रकार ममता के ममत्व से भरे स्वभाव का चित्रण किया है। अपने देश की परंपरा और संस्कृति को बनायें रखती है। ममता अपने नाम को कैसे सार्थक बनाती है यह प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

मीना –

मीना 'स्वर्ग के खंडहर में' कहानी की प्रमुख पात्र है। मीना अपने पिता से बिछड़ जाती है। मीना गुल से प्यार करती है। लेकिन गुल बहार के साथ चला जाता है। मीना गीत गाने का काम करती है। पिता से बिछड़ी मीना अपना सबकुछ खो जाती है। मीना की मानसीक संतुलन भी बिगड़ जाता है।

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. १५

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में मीना अनेक मुसीबतों का सामना करती हुई अपना जीवन बिताती है।

नेरा –

नेरा 'सुनहला साँप' कहानी की प्रमुख पात्र है। नेरा साँप पकड़ने का काम करती है। पहली मुलाकात में नेरा का सौंदर्य चंद्रदेव को आकर्षित करता है। चंद्रदेव उसे पुछता है तूम यहाँ क्या करती हो? नेरा उसे जबाब देती हैं – "बाबूजी, मैं दुसरे पहाड़ी गाँव की रहनेवाली हूँ, अपनी जीविका के लिए आयी हूँ।"१ नेरा की ओर आकर्षित होकर चंद्रदेव उसे शिशे का बक्सा देता है। रामू भी नेरा की ओर आकर्षित हो जाता है इसलिए वह मालिक को शराब भी चुराता है। चंद्रदेव और रामू में से नेरा रामू को अपना जीवन साथी चून लेती है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में नेरा एक गरिब लडकी है। अमीर चंद्रदेव उसे अपनाना चाहता है, लेकिन नेरा चंद्रदेव के नौकर रामू की जीवन सार्थी बन जाती है। नेरा रामू के साथ खुशी से अपना जीवन बिताती है।

किन्नरी–

किन्नरी 'हिमालय का पथिक' कहानी की प्रमुख पात्र है। किन्नरी अपने वृध्द पिता के साथ रहती है। एकदिन एक पथिक हिमालय का सौंदर्य देखने के लिए आता हैं। पथिक किन्नरी और वृध्द के साथ रहता है। पथिक और किन्नरी एक – दूसरे से प्रेम करने लगते है। पथिक फूलों की माला किन्नरी को पहनाता है तब वृध्द उसे रोकता हैं। लेकिन पथिक नही मानता। किन्नरी पथिक से बहुत प्यार करती है। पथिक जब हिमालय पर जाता है तब किन्नरी भी उसके साथ चली जाती है। किन्नरी और पथिक बर्फ में हमेशा के लिए खो जाते है।

इसप्रकार किन्नरी का प्रेम अमर हो जाता है। किन्नरी अपने सथी से बिछड़ नहीं जाती बल्की हमेशा के लिए एक – दूसरे के हो जाते है। किन्नरी

---

१. जयशंकर प्रसाद -- 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ३८

अपने प्यार को अकेला नहीं छोड़ती बल्की वह भी हमेशा के लिए मर – मिट जाती है। यहाँ पर किन्नरी का नि:स्वार्थ और एकनिष्ठ प्रेम नजर आता है।

भिखारिन –

भिखारिन 'भिखारिन' कहानी की प्रमुख पात्र है। भिखारिन का दुनिया में कोई भी नहीं होता। अपना पेट भरने के लिए वह भिख मांगने का काम करती है। ऐसे ही वह भिख मांगने का काम करती है। ऐसे ही वह भिखा मांगती है तब निर्मल को उसकी दया आ जाती है लेकिन वह कुछ नहीं कर सका। निर्मल माँ से उसे काम देने को कहता है। लेकिन माँ नहीं मानती है। भिखारिन का रोज का यही काम था कि, वह भिख मांगती फिरती है। एकदिन जब निर्मल उससे शादी की बात करता है तो उसका स्वाभिमान जाग जाता है। भिखारिन उसे जबाब देती है – "दो दिन माँगने पर भी तुम लोगों से एक पैसा तो देते नहीं बना, फिर क्यों गाली देते हो, बाबू? ब्याह करके निभाना तो बड़ी दूर की बात है!" १ और चली जाती है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी के माध्यम से भिखारिन के स्वाभिमान पर प्रकाश ड़ाला है। भिखारिन गरीब और भुखी होती है मगर स्वाभिमानी होती है। उसकी गरिबी का मजाक उड़ानेवाले को मुहँतोड़ जबाब देती है।

शामा :

शामा 'प्रतिध्वनी' कहानी की प्रमुख पात्र है। शामा की माँ रामा गरिबी के कारण अपनी बेटी की शादी नहीं कर पाती है। माँ के मृत्यु के बाद शामा अकेली हो जाती है। शामा एक बूढ़िया के साथ रहकर अपना जीवन बिताती है गरिबी के कारण उसकी आम की बारी निलाम हो जाती है। आम की बारो निलामी का गहरा असर शामा पर हो जाता है। वह पगली की तरह एक – दो – तीन कहती है। एक दिन शामा उसी बारी के पके आम तोडती है तो

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ४८

माली उसे बारो के पक आम तोड़ती है तो माली उसे पकड़कर प्रकाश के पास ले जाता है। प्रकाश शामा को देखकर उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। शामा प्रकाश को फटकारती है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में शामा अकेली होकर मुसिबतों का सामना। करती है। अपने स्वाभिमान को वह बनायें रखती है।

कला –

कला 'कला' कहानी की प्रमुख पात्र है। रुपनाथ और रसदेव दोनो कला से प्रेम करते है। रुपनाथ, रसदेव और कला एक – साथ पढ़ते थे। कला अपनी पढ़ाई पूरी कर के चली जाती है। रुपनाथ कला के प्रेम में चित्रकार बन जाता हैं। रसदेव कला के प्रेम में कविता करने लगता है। रसदेव का लिखा गीत गाकर कला नृत्य करती है। चित्रकार के प्रदर्शनी मैं तिनों की मुलाकात होती है। कला रसदेव को अपना जीवन साथी बना देती है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी एक प्रेम कहानी है। कला रसदेव को अपनाती है। इसमें कला के नि:स्वार्थ और एकनिष्ठ प्रेम का चित्रण किया है।

पद्मा –

पद्मा 'देवदासी' कहानी की प्रमुख पात्र है। पद्मा देवदासी है और मंदिर में नाच –गाने का काम करती है। अशोक पद्मा का रुप सौंदर्य देखकर उसकी ओर आकर्षित होता है। अशोक पद्मा को सौभाग्यभरी जिंदगी देना चाहता है। रामस्वामी धनवान होता है। अपने धन के बल पर वह पद्मा को अपनाना चाहता है। पद्मा अकेले में रामस्वामी से मिलने को इन्कार करती है। अशोक और रामस्वामी दोनों पद्मा से प्यार करते है। अशोक के साथ पद्मा को देखकर रामस्वामी को गुस्सा आ जाता है। अशोक और रामस्वामी के झगड़े में धक्का लगने से रामस्वामी पहाड़ से गिर जाता है। अशोक पद्मा को शादी के बारे में पूछना चाहता है लेकिन पूछ नहीं सकता।

इसप्रकार प्रस्तूत कहानी के माध्यम से समाज में प्रचलित परंपरा का दर्शन होता है। परंपरा वादी समाज स्त्री को अनैतिक जीवन बिताने पर मजबूर करता है। यह पद्मा के माध्यम से दिखाया है। पद्मा देवदासी होकर भी अपना स्वाभिमान नहीं छोड़ती या गलत काम नही करती है। इससे पद्मा के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

धीवर–बाला :–

धीवर–बाला 'समुद्र संतरण' कहानी की प्रमुख पात्र है। वह मछली पकड़ने का काम करती है। एसे ही जब वह मछली पकड़ने जाती है तो उसकी मुलाकात एक राजकुमार से होती है। दोनो का परिचय हो जाता है। राजकुमार सुदर्शन धीवर–बाला को देखकर उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। धीवर–बाला राजकुमार की शादी के लिए मछली पकड़ने आती है। लेकिन राजकुमार उसीसे प्यार करने लगता है। धीवर–बाला राजकुमार को अपने साथ ले जाती है। दोनों ऐसी जगह जाते हैं जहाँ उन्हे कोई अलग न कर सके।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में धीवर–बाला के सफल प्रेम को दिखाया है।

स्त्री (सुंदरी) –

स्त्री 'वैरागी' कहानी की प्रमुख पात्र है। सुंदरी वैरागी के पास आश्रय मांगती है। वैरागी उसे आश्रय देता है। वैरागी की झोपड़ी देखकर वह स्त्री उसे पूछती है, तूमने संसार की सब सुख–सुविधाओं को ठुकरा दिया और इस झोपड़ी के प्रति मोह क्यों हैं? स्त्री रातभर बाहर ही रहती है। वह बाकी लोगों के सुख में बाधा नहीं बनना चाहती है। स्त्री के उपदेश से वैरागी का मोह छूट जाता है और वह चला जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में एक बेसहारा स्त्री का चित्रण किया है। उस स्त्री में इतना विश्वास होता है, कि वह वैरागी को भी सलाह देती है। उसका मोह तोड़ती है।

मोनी –

मोनी 'बनजारा' कहानी की प्रमुख पात्र है। जखमी बनजारे नंदू को वह आश्रय देती है, उसकी सेवा करती है। मोनी नंदू को देखकर उससे प्रेम करने लगती है। चौकीदार चोरी के झूठे इल्जाम में मोनी को फसाना चाहता है क्योंकि वह बूरी नजर से उसे देखता है। मोनी ड़र से चौकीदार को अपना सबकुछ देना चाहती है। एक बार नंदू की तरफ देखकर मोनी कहती है – "मैं किसी को नहीं जानती, और नहीं जानती थी कि उपकार करने जाकर यह अपमान भोगना पड़ेगा!"१ नंदू के समजाने पर मोनी को छोड़ दिया जाता है। नंदू वहाँ से चला जाता है। कई महिनों बाद नंदू वापस आता है और मोनी को देखता है। नंदू के मन में मोनी के लिए प्यार होता है। लेकिन नंदू निराश होकर चला जाता है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में मोनी का एकनिष्ठ प्रेम नजर आता है। लेकिन पहले नंदू उसे छोड़कर चला जाता है। जब वापस आता है तो मोनी उसे अपनाती नहीं है। यहाँ पर मोनी के स्वाभिनान पर प्रकाश ड़ाला है।

चूड़ीवाली (विलासिनी) –

विलासिनी 'चूडीवाली' कहानी की प्रमुख पात्र है। चूड़ीवाली चूड़ीयाँ बेचने का काम करती है। चूड़ीवाली शादी–शूदा विजयकृष्ण से प्रेम करती है। विजयकृष्ण उसका स्विकार नहीं करते जब विजयकृष्ण की पत्नी का देहान्त हो जाता है तब चूड़ीवाली को यह विश्वास होता है की, विजयकृष्ण उसे अपनायेंगे। चूड़ीवाली का विश्वास टूट जाता है। विजयकृष्ण से वेश्या कह जानेवाली बात से चूड़ीवाली अपना जीवन बदल लेती है। विजयकृष्ण से मिली संपत्ति से वह अच्छा जीवन बिताती है। एकदिन अनजाने में उसकी

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ७९

मुलाकात विजयकृष्ण से होती है। दोनो ने एक–दुसरे को देखा नही था। उस इन्सान के मुँह से वेश्या के बारे में जो शब्द निकलते है सूनकर तब चूड़ीवाली कहती है– "वेश्या का व्यवसाय करके भी मैंने एक ही व्यक्ति से प्रेम क़िया था और मैं धर्म नहीं जानती, पर अपने सरकार से जो कुछ मुझे मिला उसे मैं लोकसेवा में लगाती हूँ। मेरे तालाब पर कोई भूखा नहीं रहने पाता। मेरी जीविका चाहे जो रही हो, मेरे अतिथि–धर्म में बाधा न दीजिये।"१ यह सूनकर विजयकृष्ण उसे पहचानते है। विजयकृष्ण और चूड़ीवाली हमेशा के लिए एक–दूसरे के साथ रहते है।

इस प्रकार प्रस्तूत कहानी में दिखाया है पद्मा तन से नही लेकिन मन से एक ही व्यक्ति से प्रेम करती है। वेश्या को भी मन होता होता है और अपने मन से वह किसी का स्विकार करती है। समाज वेश्या को ठुकराता है लेकिन उससे प्यार करने का हक नहीं छिन सकता। यहाँ पद्मा के स्वाभिमान पर प्रकाश ड़ाला है।

कामिनी –

कामिनी 'अपराधी' कहानी की प्रमुख पात्र है। कामिनी मालिनी का काम करके अपनी जीविका चलाती है। कामिनी का कोई सहारा नही था। ऐसे ही उसकी मुलाकात राजा से होती है। कामिनी को देखकर राजा उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। कामिनी राजा की हवस का शिकार बन जाती है। कामिनी को राजा से एक पुत्र हो जाता है। कामिनी और उसका पुत्र बहेलियों का व्यवसाय करते है। एक दिन राजा जंगल में वापस अपने बेटे को धनुर्विदया सिखाने के लिए आता है। गलती से कामिनी – पुत्र का तीर राजा के बेटे को लगता है और उसकी मौत हो जाती है। राजा कामिनी–पुत्र को भी मार देता है। कामिनी अपना सबकुछ खो देती है।

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. ८७

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में कामिनी की मजबूरी को दिखाया है। पहले उसे राजा से धोका मिलता हैं। बाद में वह राजा से ही अपना पुत्र खो देती है। यहाँ कामिनी की दर्दभरी कहानी को चित्रित किया है।

रमणी –

रमणी 'प्रणय–चिहन्' कहानी की प्रमुख पात्र है। रमणी जिसे प्यार करती है वह एकांतवासी रूठकर चला जाता है और एकांत में रहता है। रम्णी को जब अपने प्रेमी का संदेश मिलता है तब वह उससे मिलने आ जाती है। प्रेमी रमणी से सिर्फ चिहन् मांगता है लेकिन वह पुरस्कार के रूप में सेवक को देती है। रमणी अपने प्रेमी को समजाती है। रमणी अपने प्रेमी को एकांतवास से वापस संसार में ले जाने में कामयाब हो जाती है। अपने प्रेमी के साथ रमणी संसार में वापस जाती है।

इसप्रकार कहानी में रमणी का प्रेम सफल हो जाता है। नारी ही पुरूष को जिने के लिए प्रेरित करती है या आगे चलना सिखाती है यह प्रस्तुत कहानी में दिखाया है।

सरला –

सरला 'रूप की छाया' कहानी की प्रमुख पात्र है। सरला का बाल–विवाह हुआ था और उसका पति उसे छोड़कर चला जाता है। एक दिन भटके हुए युवक को देखकर सरला उसे अपना पती मानती है। सहेली से कहकर उसे अपने यँहा आश्रय देती है। पिछली बातों की याद उसे देती है। लेकिन युवक उसे नहीं पहचानता। सरला भावनाओं में आकर युवक शैलनाथ को बुलाती है और अपने मन की बात कहती है– "अब तुम नहीं छिप सकते। तुम्ही मेरे पति हो, तुम्हीं से मेंरा बाल–विवाह हुआ था, एक दिन चाची के बिगड़ने पर सहसा घर से निकलकर कहीं चले गये, फिर न लौटे। हम लोग

आजकल अनेक तिर्थों में तुम्हें खोजती हुई भटक रही हैं। तुम्ही मेरे देवता हो; तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो। कह दो –हाँ!''१ सरला की यह दर्द भरी बाते सुनकर शैलनाथ हाँ कहनेवाला था लेकिन इसे पाप समझकर वहाँ से चला जाता है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में बाल–विवाह के होनेवाले परिणामों को चित्रित किया है। सरला की मानसिकता बाल–विवाह होने से बिगड जाती है। बाल–विवाह का शिकार हुई सरला को चित्रित किया है।

वनलता :–

वनलता 'ज्यातिष्मती' कहानी की प्रमुख पात्र है। वनलता अपने पिता की आँखे ठिक करने के लिए जंगल में ज्योतिष्मती फूल को ढूंढने निकलती है। तो वहाँ उसकी मुलाकात एक युवक से होती है। जो वनलता को मदद करना चाहता है। वनलता युवक के साथ ज्योतिष्मती ढूंढ़ने निकलती है। वनलता युवक से कहती है, कि पवित्र प्रेमी ही ज्यातिष्मती को छू सकते है। युवक के आगे बढ़ने से ज्यातिष्मती मेघ में विलिन हो जाती है। वनलता निराश हो जाती है।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में वनलता की मानसिकता को चित्रित किया है। वनलता का अपने पिता के प्रति जो प्रेम है वह दिखाया है।

रमला :–

रमला 'रमला कहानी की प्रमुख पात्र है। रमला गाँव में सबसे चंचल लड़की समझी जाती है। उसकी चंचलता के कारण उसका ब्याह नहीं होता। लड़कों का मझाक करना और उन पर चपत मारना उसका काम होता है। मंजल भी रमला का मझाक करता है। जान–बूझकर मंजल पहाड़ी पर खड़ी रमला को धक्का देता है। तो रमला गिर जाती है। वहाँ रमला की मुलाकात साजन से होती है। रमला साजन के साथ रहती है। रमला के साथ रहकर

---

१. जयशंकर प्रसाद – ' आकाश – दीप' कहानी संग्रह – पृ. क्र. १०२

साजन उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। एक दिन घूमते–घूमते साजन और रमला एक गाँव में पहूँचते है। वह रमला का गाँव होता है। रमला मंजल को देखती है, मंजल अपनी गलती की क्षमा मांगता है।

इसप्रकार प्रस्तूत कहानी में रमला की चंचलता का चित्रण किया है।

शीरीं –

शीरीं 'बिसाती' कहानी की प्रमुख पात्र है। अपनी सहेलियों के साथ प्रकृति का सौंदर्य देखती है। शीरीं के सपने में एक युवक आता है जो पीठ पर सामान लादकर बेचने का काम करता है। शीरीं उसका बोझ कम करना चाहती है। शीरीं की शादी एक धनी सरदार से हो जाती है। उस शादी में एक युवक सामान लेकर आता है। सरदार अपनी प्रेयसी के लिए वह सामान खरिदना चाहता है। आखिर वह युवक अपना सामान वही पर छोड़कर चला जाता है। तब शीरीं को लगता है कि, उसके सपने में आनेवाला युवक वही था।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में शीरीं युवक को बोझ कम करती है। लेकिन उसे दाम नहीं दे सकती।

४.३.५ विविच्य कहानियों में गौण पुरूष–नारी पात्र –

नायक –

'आकाश–दीप' कहानी में नायक के खल–वृत्ति का दर्शन होता है। नायक चम्पा और बुध्दगुप्त को बंदी बनाना चाहता है लेकिन असफल हो जाता है।

जया –

'आकाश दीप' कहानी की जया दुसरी गौण पात्र है। जो चम्पा की सेवा करती है।

चूडामणि –

'ममता' कहानी में चुड़ामणि ममता के पिता है। स्वार्थी और लोभी वृत्ती के कारण मारे जाते है।

शाहंशाह –

शाहंशाह 'ममता८ कहानी का दुसरा गौणपात्र हैं। राजा होकर एक दीन मम्ता की झोपडी में आश्रय लेता है।

गुल –

गुल यह पात्र 'स्वर्ग के खँड़हर में' कहानी में आया है। मीना गुल से प्यार करती है लेकिन गुल बहार के साथ चला जाता है।

देवकुमार –

देवकुमार 'सुनहला साँप' कहानी में चंद्रदेव का दोस्त है। देवकुमार हमेशा चंद्रदेव के साथ रहता है और साँप पकड़ने का काम करते है।

वृध्द –

वृध्द 'हिमालय का पथिक' कहानी में किन्नरी का पिता है। वृध्द पथिक और किन्नरी के प्रेम का विरोध करता है।

निर्मल की माँ –

निर्मल की माँ 'भिखारिन' निर्मल की माँ है। जो दया, दान करना नही जानती है।

भाभी –

भाभी 'भिप्पारिन' कहानी की दूसरी गौणपात्र है। यह निर्मल की भाभी है।

प्रकाश –

प्रकाश 'प्रतिध्वनी' कहानी में विलासी रूप में दिखाया है। मुफ्त में मिली संपत्ती से वह विलासी और कामुक बन जाता है।

तारा –

तारा 'प्रतिध्वनी' कहानी की दूसरी गौणपात्र हैं। तारा विधवा होती हैं। पति की मौत का जिम्मेदार ननंद दसे मानती है।

रामा –

रामा 'प्रतिध्वनी' कहानी की तिसरी गौणपात्र है। जो गरिबी के कारण अपनी बेटी का ब्याह नहीं कर सकी। उसकी मौत हो जाती है।

मन्नी –

मन्नी 'प्रतिध्वनी' कहानी की चौथी गौण–पात्र है। जो एक बुदिया है। मन्नी निस्सहाय शामा को अपने घर सहारा देती है।

रूपनाथ –

रूपनाथ 'कला' कहानी में एक चित्रकार है जो कला से बहुत प्यार करता है। रूपनाथ का प्रेम असफल बन जाता है।

रामस्वामी –

रामस्वामी 'देवदासी' कहानी में एक धनवान के रूप में नजर आता है। देवदासी पद्मा को धन के बल पर पाना चाहती है लेकिन असफल हो जाता है।

चिदंबरम् –

चिदंबरम् 'देवदासी' कहानी का दूसरा गौणपात्र है। जो हमेशा रामस्वामी की मदद करता है।

चौकीदार –

चौकीदार 'बनजारा' कहानी में चौकीदार के रूप में आया है। चौकीदार झुठा इल्जाम लगाकर मोनी को फसाना चाहता है। और अपनी विकृत इच्छा पूरी करना चाहता है। लेकिन असफल हो जाता है।

सरकार की पत्नी :–

'चूड़ीवाली' कहानी में सरकार विजयकृष्ण की पत्नी को सरकार की पत्नी कहाँ गया हैं। जो संसार में सरकार का साथ छोड़कर भगवान को प्यारी हो जाती है।

नंदू –

'चूड़ीवाली' कहानी का नंदू दूसरा गौणपात्र है। जो चूड़ीवाली के साथ रहकर दूसरों की सेवा करता है।

कामिनी पुत्र –

कामिनी पुत्र 'अपराधी' कहानी में कामिनी का बेटा हैं। लेकिन एक गलती की सजा उसके प्राण लेती है।

सेवक –

सेवक 'प्रणय चिहन्' कहानी में सेवक के रूप में आया है। सेवक दो प्रेमियों को मिलाने का काम करता है।

प्रौढ़ा –

प्रौढ़ा 'रूप की छाया' कहानी में सरला की सहेली है। जो सरला को उसका पति ढूंढ़ने में मदद करती है।

मंजल –

मंजल 'रमला' कहानी में रमला का दोस्त है। अपनी गलती पर वह रमला से क्षमा मांगता है और उसे अपने साथ रहने को कहता है।

जुलेखा –

जुलेखा 'बसाती' कहानी में शीरीं की दोस्त है। जुलेखा हमेशा शीरीं के साथ रहती है।

सरदार –

सरदार 'बिसाती' कहानी का दूसरा गौणपात्र हैं। जिसकी शीरीं के साथ शादी हो जाती है।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि विवेच्छ कहानियों के पात्रों का चरित्र–चित्रण प्रभावी है। प्रसाद एक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में सभी पात्रो को प्रभावशाली बनाया है । मुख्य पात्रों के साथ–साथ गौण – पात्रों को भी चित्रित किया है । प्रसाद ने सब से ज्यादा नारी को महत्व दिया है। नारी को सब से श्रेष्ठ माना है । नारी के सभी रुपों को चित्रित किया है । मुसिबतों को नारी घबराती नहीं उसका सामना करती है । इसप्रकार पात्रों को प्रस्तुत कहानियों में चित्रित किया है ।

४.४ कथोपकथन –

कथोपकथन को कहानी का छोटा अंश माना है । पात्रों के भावो और विचारों का आदान प्रदान भाषा के माध्यम से होता है । पात्रो के बीच के इस विचार–विनियम को कथोपकथन या संवाद कहते है । कहानी में पात्रो के एक – दूसरे से होनेवाले वार्तालाप में इस तत्व का समावेश होता है ।

४.४.१ कथोपकथन का महत्व –

कहानी में कथोपकथन को आवश्यक माना जाता है । कहानी में कथोपकथन या संवाद का महत्व के बारे में डॉ. श्याम सुंदर दास लिखते है – "कथोपकथन का आख्यायिका के लिए बहुत बड़ा महत्व है ।....कथोपकथन के द्वारा यदि वह अत्यंत मार्मिक तथा वास्तविक हो तो एक अनोखा चमत्कार उत्पन्न किया जा सकता है और पाठक स्वत: उससे अपना निष्कर्ष निकाल लेता है ।.....आधुनिक कथोपकथन, जिसका प्रयोग नाटक तथा आख्यायिका में किया

जाता है, अत्यंत मार्मिक मनोवैज्ञानिक वस्तु है । इसका उपयोग उत्तम कोटी के कलाकार करते हैं और उसमें बौद्धिक उत्कर्ष की पराकाष्टा दिखा देते हैं। उनके हाथों मे पड़कर कथोपकथन श्रेष्ठ ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति की प्रणाली बन जाता है।"१ कथोपकथन कहानी को सजीवता प्रदान करता है । विभिन्न संवाद कहानी की प्रभावशाली बनाते हैं । कथोपकथन के बारे में केदारनाथ शुक्ल कहते है – "कथोपकथन कहानी का सर्वोत्तम अंग है यह एक ऐसा आवश्यक तत्व है जो पात्रों से घनिष्ठ संबंध रखता है । इसी अंग द्वारा पात्रों के स्वभाव और चरित्र आदि का ज्ञान होता है ।"२ कहानियों में कथोपकथन को महत्व पूर्ण माना जाता है ।

४.४.२ चरित्र चित्रण में सहायक कथोपकथन –

१ "बुध्दगुप्त ने चंपा के पैर पकड़ लिए । उच्छवसित शब्दों में वह कहने लगा – चंपा, हम लोग जन्मभूमि–भारतवर्ष से कितनी दूर इन निरीह प्राणियों में इंद्र और शची के समान पूजित हैं । पर न जाने कौन अभिशाप हम लोगों को अभी तक अलग किये है । स्मरण होता है वह दर्शनिकों का देश! वह महिमा की प्रतिमा ! मुझे वह स्मृति नित्य आकर्षित करती है; परंतु मैं क्यों नहीं जाता? जानती हो, इतना महत्व प्राप्त करने पर भी मैं कंगाल हूँ ! मेरा पत्थर – सा हृदय एक दिन सहसा तुम्हारे स्पर्श से चंद्रकांतमणि की तरह द्रवित हुआ ।"२

२. "निर्मल भावुक चुपक था । उसने पूछा – 'तुम भीख क्यों माँगती हो ?' भिखारिन की पोटली के चावल फटे कपड़े के छिद्र से गिर रहे थे ।

---

१. डॉ. श्याम सुंदर दास – साहित्यलोचन, पृष्ठ –१९०
२. केदारनाथ शुक्ल–प्रसाद की कहानियाँ पृष्ठ १६५
३. जयशंकर प्रसाद –'आकाश दीप कहानी संग्रह' पृष्ठ क्र. १६

उन्हे संभालते हुए कहा – 'बाबूजी पेट के लिए ।'

निर्मल ने कहा – 'नोकरी क्यों नहीं करती ?

माँ, इसे अपने यहाँ क्यों नहीं लेती हो?

धनिया तो प्राय: आती भी नहीं ।

माता ने गम्भीरता से कहा – 'रख लो ! कौन जाति है, किसी है, जाना न सुना; बस रख लो।'

निर्मल ने कहा – 'माँ, दरिद्रों की तो एक ही जाति होती है।'

माँ झल्ला उठी, और भिखारिन लौट चली । निर्मल ने देखा, जैसे उमड़ी हुई मेघमाला बिना बरसे हुए लौट गई। उसका जी कचोट उठा। विवश था, माता के साथ चला गया । "१

३. "मंदीर में दर्शन करनेवालों का मनोरंजन करना मेरा कर्तव्य हे; मैं देवदासी हूँ" – उसने कहा।

'यह तो बड़ा अत्याचार है। तुम क्यों यहाँ रहकर अपने को अपमानित करती हो?' – मैंने कहा।

'कहाँ जाऊँ, मैं देवता के लिए उत्सर्ग कर दी गई हूँ!' – उसने कहा।

'नहीं – नहीं, देवता तो क्या राक्षस भी मानव – स्वभाव की बलि नहीं लेता – वह तो रक्त–माँस से ही संतुष्ट हो जाता है। तुम अपनी आत्मा और अन्त: करण की बलि क्यों करती हो?' – मैंने कहा।

ऐसा न कहो, पाप होंगा; देवता रुष्ट होंगे। – उसने काह । "२

---

१. जयशंकर प्रसाद – "आकाश– दीप कहानी संग्रह" – पृ. क्र. ४७

२. वही – पृ. क्र. ६४

४. "बालिका छटपटाकर कहने लगी – 'हॉ – हाँ, छूना मत; पिताजी की आँखें, आह!' तब तक साहसिक की लम्बी छाया ने ज्योतिष्मती पर पड़ती हुई चंद्रिका को ढ़ँक लिया। वह एक दीर्घ व निश्वास फेंककर जैसे सो गई। बिजली के फूल मेघ में विलीन हो गये। चंद्रमा खिसककर पश्चिमी शैलमाला के नीचे जा गिरा।"१

उपर्युक्त कथोपकथन पात्रों की अंतरिक को स्पष्ट करते है। साथ – साथ पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करता हैं। कथावस्तु के विकास में सहायक कथोपथन –

१. " एक दिन पथिक ने कहा – 'कल मैं जाऊंगा।'

किन्नरी ने पूछा – ' किधर?'

पथिक ने हिमगिरी की ऊँची चोटी दिखलाते हुए कहा– 'उधर, जहाँ कोई न गया हो!'

किन्नरी ने पूछा – 'वहाँ जाकर क्या करोगे?'

'देखकर लौट आऊँगा।'

'अभी से क्यों नहीं जाना रोकते, जब लौट ही आता है?'

'देखकर आऊँगा; तुम लोगों से मिलते हुए देश को लौट जाऊँगा। वहाँ जाकर यहाँ का सब समाचार सुनाऊँगा।"

'वहाँ क्या तुम्हारा कोई परिचित है?'

'यहाँ पर कौन था?'

'चले जाने में तुमको कुछ कष्ट नहीं होगा?'

'कुछ नही; हाँ एक बार जिनका स्मरण होगा, उनके लिए जी कचोटेग। परंतु ऐसे कितने ही हैं!'

'कितने होंगे?'

---

१. जयशंकर प्रसाद – "आकाश– दीप कहानी संग्रह" – पृ. क्र. १०६

'बहुत – से जिनके यहाँ दो घडी से लेकर दो – चार दिन त्क आश्रय ले चुका हूँ। उन दयालुओं की कृतज्ञता से विमुख नहीं होता।'

'मेरी इच्छा होती है कि उस शिखर तक मैं भी तुम्हारे साथ चलकर देखूँ। बाबा से पूछ लूँ।" १

२. धीवर – बाला आकर खडी हो गई। बोली – 'मुझे किसने पुकारा?'

'मैने'

'क्या हकर पुकारा?'

'सुन्दरी!'

'क्यों, मुझमें क्या सौन्दर्य है? और है भी कुछ, तो क्या तुमसे विशेष ?'

'हाँ, मैं आज तक किसी को सुन्दरी कहकर नहीं पुकार सका था, क्योंकि यह सौन्दर्य – विवेचना मुझमें अब तक नहीं थी।'

'आज अकस्मात् यह सौंदर्य – विवेक तुम्हारे हृदय में कहाँ से आया?'

'तुम्हें देखकर मेरी सोई हुई सौंदर्य – तृष्णा जाग गई।'

'परंतु भाषा में जिसे सौंदर्य कहते हैं, वह तो तुममें पूर्ण है।"२

३. "'हाँ, मैं हिन्दू स्कूल में पढ़ता हूँ।'

'क्या तुम्हारे घर के लोग यहीं हैं?'

'नहीं, मैं एक विदेशी, निस्सहाय विदयार्थी हूँ।'

'तब तुम्हें सहायता की आवश्यकता है?'

'यदि मिल जाय, मुझे रहने के लिए स्थान का बड़ा कष्ट है।'

'हम लोग दो–तीन स्त्रियाँ हैं। कोई अडचन न हो, तो हम लोगों के साथ रह सकते हो।'

---

१. जयशंकर प्रसाद – "आकाश– दीप कहानी संग्रह" – पृ. क्र. ७१
२. वही – पृ. क्र. १०१

'बड़ी प्रसन्नता से, आप लोगों का कोई छोटा – मोटा काम भी कर दिया करुँगा।'

'अभी चल सकत हो?'

'कुछ पुस्तक और सामन है, उन्हें लेता आऊँ।'

'लो आओ, मैं बैठी हूँ।'

युवक चला गया।"१

उपरयुक्त सवंदा कथावस्तु के विकास में सहायक सिध्द होते है। इसी तरह 'अपराधी,'रमला', 'प्रणय – चिहन्','वैरागी', 'बनजारा' आदि कहानियों में भी संवाद प्राप्त होते हैं।

निष्कर्ष :

विवेच्या कहानियों में देखे संवाद कहानी को प्रभावशाली बनाते है। कहानी में आये संवादो से पात्रों का चरित्र स्पष्ट होता है। इसप्रकार संवाद कथावस्तु के विकास में सहायक होते है।

४.५ देश, काल तथा वातावरण का मूल्यांकन :

कहानी में अन्य तत्त्वों के साथ देश, काल तथा वातावरण को भी महत्त्व है। इसका योगदान कहानी को आकर्षक बनाता है। कहानी में परिवेश के बारे में राहुल भारद्वाज बताते हैं, "स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय परिवेश में बड़ा तेजी से विकास हुआ है। अनेक विकास योजनाओ ने जहाँ मनुष्य के विकास के द्वार खोले वहाँ उसे अनेक विकृतियों का उपहार भी दिया। मनुष्य एकदम महत्त्वाकांक्षी हो उठा, जिसकी पूर्ति के अभाव में अनेक कुंठाओं ने उसे त्रास देना शुरु किया। मूल्यों में विघटन से चारित्रिक पतन को नंगे परिदृश्य सामने आए। स्त्री और पुरुष दोनों ही स्वच्छंद यौनाचार में लिप्त होते गए।

---

१. जयशंकर प्रसाद – "आकाश– दीप कहानी संग्रह" – पृ. क्र. १०१

बदलते परिवेश ने व्यक्ति संबंधो को एक नया रुप दिया। बदलते हुए पारिवारिक, सामाजमिक, वातावरण में जो संबध विकसित हुए उनमें अनेक प्रकार की घुटन, कुंठाएँ एवं संत्रास का हलाहल मिला हुआ था। "१

४.५.१ परिवेश के गुण –

कहानी के परिवेश में चित्रात्मकता, वास्तविकता, सूक्ष्मता आदि गुणों का समावेश होता है।

४.५.२ परिवेश के भेद –

कहानी के परिवेश में अलग – अलग प्रकार के भेद होते हैं। परिवेश दो प्रकारके होते है एक प्राकृतिक और दूसरा सामाजिक। सामाजिक परिवेश में परिवार, मेले – त्यौहार, सामाजिक स्थितियाँ, शहर – गाँव आदि बाते आती है। प्राकृतिक परिवेश मे खेत – खलिहान, मौसम – ऋतु, नदी – नाले, दिन–रात, सुबह – शाम आदि बातें आती है। परिवेश के अनुसार सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, ग्रामीण, प्राकृतिक, तिलस्मी, जादूई आदि भेदों का समावेश होता है।

हेतु भारद्वाज परिवेश के बारे में लिखते हैं, "निश्चय ही रचना के मूल में लिखते हैं, "निश्चय ही रचना के मूल में रचनाकार की अनुभूति रहती है किंतु परिवेश के साथ गहरी एवं आत्मीय संबंधता उसकी रचना को ईमानदार और प्रामाणिक बनाती है। परिवेश की जानकारी रचना को आधार देती है। प्रेमचंद्र का कथा – साहित्य सहज तथा प्रभावशाली इसलिए है कि वे अपने पात्रों और पात्रों के परिवेश को अच्छी तरह से जानते हैं।" २

४.५.३ परिवेश का महत्त्व :–

कथावस्तु के विकास में परिवेश का महत्त्वपूर्ण स्थान है। परिवेश के बीच घटित होनेवाली घटनाओं से चरित्र बनते है और विकसित होते हैं।

---

१. राहुल भारद्वाज–नवे दशक की हिंदी कहानी में मूल्य – विघटन, पृष्ठ–३७
२. हेतु भारद्वाज– परिवेश की चुनौनियाँ और साहित्य, पृष्ठ–१०

परिवेश का महत्त्व बताते रामदरश मिश्र कहते हैं, "कथानक में परिवेश (वातावरण या देशकाल) का महत्त्व कई दृष्टियों से होता है। एक तो वह कथा को स्थान और समय की पृष्ठभूमि प्रदान कर उसके स्वरुप को मूर्त करता है और विश्वसनीय बनाता है, दूसरे वह कभी – कभी कथा के सर्ज तत्त्व के रुप में भी काम करता है ।"१

४.५.४ विवेच्या कहानियों के परिवेश का मूल्यांकन :

'आकाश – दीप' कहानी संग्रह में अलग – अलग परिवेश का प्रयोग किया है। जिससे कहानी की पृष्ठभूमि सुनियोजित करके कथा को विकसीत करने में सहायक सिध्द हुआ हैं

४.५.४.१ प्राकृतिक परिवेश –

प्रकृति का चित्रण अध्याय क्र. २ में किया गया है। इसलिए यहाँ पर फिर से नहीं लिया गया ।

४.५.४.२ उदासी का वातावरण –

मानसिक रुप से टूटे हुए पात्रों की मानसिकता दर्शाने के लिए उदासी के वातावरण का चित्रण कहानियों में पाया जाता है। जैसे – "मीना गाने लगी। उस गीत का तात्पर्य था – 'मैं एक भटकी हुई बुलबुल हूँ। हे मेरे अपरिचित कुंज ! क्षण – भर मुझे विश्राम करने दोगे? यह मेरा क्रंदन है – मैं सच कहती हूँ, यह मेरा रोना है, गाना नहीं। मुझे दम तो लेने दो । आने दो बसंत का वह प्रभात – जब संसार गुलाबी रंग में नहाकर अपने यौवन में थिरकने लगेगा और तब मैं तुम्हें अपनी एक तान सुनाकर चली जाऊँगी। तब तक अपनी किसी सूखी हुई टूटी ड़ाल पर ही अंधकार बित लेने दो। मैं एक पथ भूली बुलबूल हूँ!"२ यह वातावरण कहानी की नायिका मीना की आंतरिक पीड़ा व्यक्त करने में सहायक हुआ है।

---

१. रामदरश मिश्र – हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान, पृष्ठ – २३
२. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश -दीप' कहानी संग्रह – पृष्ठ क्र. २६

'चूड़ीवाली' कहानी में भी इस प्रकार का परिवेश प्राप्त होता है। जैसे "सरकार! मैंने गृहस्थ – कुलवधू होने के लिए कठोर तपस्या की है। इन चार वर्षों में मुझे विश्वास हो गया है कि कुलवधू होने में जो महत्त्व हैं, वह सेवा का है, न कि विलास का।"१

इसप्रकार उदासी का वातावरण निर्माण करके लेखक ने पात्रों की व्यथा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि विवेच्या कहानियों में जिन परिवेशों का प्रयोग किया है वह नजर आते है। प्राकृतिक परिवेश का चित्रण मिलता है। उदासी का वातावरण चित्रित कर के पात्रों की मानसिकता को दर्शाया है। ऐसे वातावरण के कारण कहानियाँ गतिशील और प्रभावशाली बनी है।

यहाँ परिवेशानुकूल वातावरण को चित्रित करने में जयशंकर प्रसाद सफल रहें है।

४.६ भाषा :

साहित्य, समाज का दर्पण होता है। साहित्य को स्पष्ट करने का कार्य भाषा करती है। अपने भावों और विचारों को एक– दुसरे से व्यक्त करने का कार्य भाषा के द्वारा ही होता है। अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता हैं । भाषा के बारे में सुमित्रा शर्मा लिखती हैं – "लेखक के विचार तथा भावनाओं को पाठक तक पहुँचानेवाली रचना के विविधा अंगों की दृष्टि का साधन भाषा है। "२ कहानी के अन्य तत्त्वों में भाषा भी कहानी का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। कहानी की भाषा सरल होनी चाहिए जिससे

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश –दीप' कहानी संग्रह – पृष्ठ क्र. ८७
२. सुमित्रा शर्मा –कौसिक जी का कथा साहित्य, पृष्ठ –८३

कहानी आकर्षक बनती है । कहानी की भाषा क्लिष्ट हो तो कहानी नीरस बनती है । योग्य शब्द योजना कहानी को महत्त्वपूर्ण बना देती है। इसतरह कहानी की भाषा प्रभावमय होनी चाहिए ।

४.६.१ भाषा के गुण –

कहानी की भाषा में भावात्मकता, प्रवाहात्मकता, चित्रात्मकता तथा अलंकारिकता आदि गुण होते हैं। नाटकीयता, व्यंगात्मकता, प्रतिकात्मकता आदि गुण भी कहानी में आवश्यक होते हैं । यह सभी गुण भाषा को परिपूर्णर्ता प्रदान करते हैं ।

४.६.२ कहानी में भाषा के विविध रुप –

भाषा के अनेक रुप होते है, जिनका प्रयोग कहानीकारों द्‌वारा किया जाता है । अंग्रेजी फ्रेंच, अरबी, फारशी उर्दू आदि भाषाओ के शब्दों का प्रयोग किया जाता है ।

४.६.३ भाषा का महत्व –

कहानी में भाषा का महत्व बड़ा होता है । कहानी के पात्र अपने मनोभावों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करते है । भाषा के महत्व के बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंड़न कहते हैं, "कहानी में भाषा तत्त्व का इसलिए भी विशेष महत्त्व है क्योंकी कहानी का मूल विषय मानव जीवन का चित्रण करना है और भाषा भी मूलत: मानव समाज की ही एक रचना है। कहानी में जीवन और समाज के विशद चित्रण का आधार पात्र योजना है, जिसकी भावभिव्यक्ती का आधार ही भाषा ही है।" १ इसप्रकार साहित्य में भाषा महत्त्व पूर्ण होती है ।

४.६.४ विवेच्छ कहानियों में भाषा का मूल्यांकन –

'आकाश दीप' कहानी संग्रह में निहित कहानियों की भाषा में जिन शब्दो का प्रयोग किया है वह निम्नलिखित है ।

---

१. डॉ. प्रताप नारायण टंडन – हिंदी कहानी कला, पृष्ठ ३६२

४.६.४.१ द्विरुक्त शब्द –

प्रसाद के विवेच्छ कहानियों की भाषा में अपेक्षित भावों और विचारों की अभिव्यक्ती के लिए जिन द्विरुक्त शब्दों का प्रयोग किया है, वह निम्नालिखित है ।

'देखते – देखते' १ 'भाँति – भाँति' २

'कभी – कभी' ३ 'नहीं – नहीं ' ४' 'बडे – बडे' ५,

'पतले – पतले', ६ 'मधुर – मधुर' ७

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश – दीप' कहानी संग्रह – पृष्ठ क्र. १३
२. वही – पृष्ठ क्र. २३
३. वही – पृष्ठ क्र. २५
४. वही – पृष्ठ क्र. ३९
५. वही – पृष्ठ क्र. ४२
६. वही – पृष्ठ क्र. ५४
७. वही – पृष्ठ क्र. ५७

४.६.४.२ व्यंग्यामक वाक्य –

''अरे मैया रे, किसका पाप किसे खा गया रे!''१

''यह किस पाप का फल है? तू जानता है, इसे कौन खायेगा? बोल! कौन मरेगा? बोल! एक – दोन – तीन''२

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि विवेच्य कहानियों की भाषा सरल और प्रभावी है। भाषा में क्लिष्टता नहीं है।

४.६.२ शैली –

कहानी में शैली का स्थान भी महत्त्वपूर्ण होता है। कहानीकार अपनी भावाभिव्यक्ति को जिस विशेष पद्धति से व्यक्त करता है, उसे शैली कहा जाता है। शैली के बारे में लक्ष्मीनारायण लाल कहते हैं, ''कथावस्तु, पात्र और चरित्र – चित्रण, कथोपकथन और वातावरण आदि कहानी कला के विभिन्न तत्त्व हैं, लेकिन शैली तत्व कहानी कला की वह रीति है जो इसके तत्त्वों को अपने विधान में उपयोग करती है। स्पष्ट शब्दों में शैली तत्व कहानी – कला के समस्त उपकरणों के उपयोगकरने के रीति है।''३

इससे स्पष्ट होता है कि, शैली कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्व है। शैली कहानी को आकर्षक बनाने में मदद करती है।

४.६.२.१ शैली का स्वरूप –

डॉ. गुलाबराय ने कहानी में शैली का विवेचन करते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट किया है। उनका कहना है – ''शैली का संबंध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् सब तत्त्वों से हैं और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता है। कला की प्रषणीयता अर्थात् दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति शैली पर ही निर्भर करती है। किसी बात के कहने

---

१. जयशंकर प्रसाद – 'आकाश – दीप' कहानी संग्रह – पृष्ठ क्र. ४९

२. वही – पृष्ठ क्र. ५३

३. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल–हिंदी कहानियों की शिल्प –विधि का विकास, पृष्ठ . ३१०

या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते हैं। इसका संबंध केवल शब्दों से ही नहीं है, वरन् विचार और भावों से भी है।'' १

४.६.२.२ शैली के गुण –

कहानी में शैली तत्व के गुण का होना जरूरी होता है। भावात्मकता, अलंकारिकता, रोचकता, प्रतिकात्मकता, व्यग्यात्मकता तथा आंचलिकता आदि गुण होते है। यही गुण रचना को प्रभावीत बना देते है।

४.६.२.३ शैली के भेद –

आज के युग में कहानी में शैली को महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा – शैली पर साहित्यकार की रहण–सहण, व्यक्तित्व और परिस्थियों का प्रभाव होता है। आज कहानियों में नई – नई शैलियों का प्रयोग हो रहा है। कथात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, संवादात्मक शैली, नाटकीय शैली, डायरी शैली, काव्यात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, स्वप्न शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली आदि कहानी की प्रमुख शैलियों के प्रकार है।

विवेच्य कहानियों में शैली का मूल्यांकन –

प्रसाद के 'आकाश – दीप' कहानी संग्रह की कहानियों की भाषा को अधिक रोचक, प्रवाहमयी एवं प्रभावकारी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। इनमें आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, कथात्मक शैली, स्वप्न शैली आदि शैलियाँ नजर आती है।

४.६.२.४ आत्मकथात्मक शैली –

इस शैली में कहानी का काई पात्र 'मैं' के घरातल से आत्मविश्लेषण के द्वारा पूरी कहानी कह ड़ालता है। इसमें व्यक्ति को महत्त्व दिया जाता है। इस बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं – ''उत्तम पुरूष अथवा प्रथम पुरूष की ओर से जो कथा प्रस्तुत की जाती है उसे हम आत्मकथात्मक शैली

१. डॉ. गुलाबराय – काव्य के रूप, पृष्ठ २२५

के अंतर्गत रखते हैं। स्थूल रूप से, इस शैली के अंतर्गत प्राय: वे बस कथाएँ आ जाती हैं, जिनमें प्रथम पुरूष की ओर से किसी कथा का वर्णन हो।''१

''तारा जिस दिन विधवा हुई, जिस समय सब लोग रो – पीट रहे थे, उसकी ननंद ने भाई के मरने पर भी, रोदन के साथ व्यंग स्वर में कहा –'अरे मैया रे, किसका पाप किसे खा गया रे!' – तभी आसन्न वैधव्य ठेलकर, अपने कानों को ऊँचा करके, तारा ने वह तीक्ष्ण व्यंग रोदन के कोलाहल में भी सुन लिया था।''२

इस प्रकार इसमें आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग मिलता है।

४.६.२.५ कथात्मक शैली –

इस शैली में लिखी जानेवाली कहानियाँ सम्यकता से परिचय देती हैं। इसमें कहानीकार तटस्थता से कहानी का निर्माण करता है। इसमें घटना का चित्रण, वर्णन, भावात्मक वर्णन औरे विश्लेषण नजर आता है। इस बारे में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कहते हैं –''इस शैली के अंतर्गत कहानीकार एक कथानक की भाँति पूर्णत: तटस्थ होकर कहानी की सृष्टि करता है। यह सृष्टि पूर्ण वर्णनात्मक ढ़ंग की होती अत: समूची कहानी का सूत्रधार स्पष्ट रूप से कहानीकार हीन है और इसका नायकत्व 'वह' अथवा किसी अन्य पुरूष को दिया जाता है।''३

प्रसाद ने विवेच्य कहानेयों में कथात्मक शैली का प्रयोग किया जैसे –''जान्हवी के तट पर। चंपा –नगरी की एक क्षत्रिय बालिका हूँ। पिता इसी मणिभद्र के यहाँ प्रहरी का काम करते थे। मात का देहावसान हो जाने पर मैं भी पिता के साथ नाव पर ही रहने लगी। आठ बरस से समुद्र ही मेरा घर है। तुम्हारे आक्रमण के समय मेरे पिता ने ही सात दस्युओं को मारकर जल–समाधी ली। एक मास हुआ, मैं इस नील नभ के नीचे, नील जलनिधी के

---

१. डॉ. प्रतापनारायण टंडन -- हिंदी उपन्यास कला, पृष्ट २६६

२. जयशंकर प्रसाद – आकाश – दीप कहानी संग्रह – पृष्ट क्र. ४९

३. लक्ष्मीनारायण लाल–हिंदी कहानियों की शिल्पविधी का विकास, पृष्ट ३१२

के उपर, एक भयानक अनंतता में निस्सहाय हूँ – अनाथ हूँ।'' १ इसमें कथात्मक शैली का प्रयोग किया हैं।

४.६.२.६ पूर्वदीप्ति शैली–

इस शैली में जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति में होता है। इस शैली का संबंध पात्रों के अतीत से जुड़ा होता है। तत्कालीन भावबोध को प्रकट करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है। प्रसाद ने कुछ कहानियों में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है।

''तारा की अग्नि – बाण – सी आँखें किसी को जला देने के लिए खाजने लगीं। फिर उसके हृदय में वही बहुत दिन की बात प्रतिध्वनित होने लगी –'किसका पाप किसको खा गया रे!' – तारा चौंक उठी। उसने सोचा रामा की कन्या व्यंग्य कर रही है – भीख लेने के लिए कह रही है। तारा होंठ चबाती हुई चली गई।''२

यहाँ स्पष्ट होता है कि विवेच्य कहानियों में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है।

४.६.२.७ स्वप्न शैली –

इस शैली के द्वरा व्यक्ति की भावनाओं और इच्छाओं को स्वप्नों के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। प्रसाद ने कम मात्रा में सही स्वप्न शैली का प्रयोग किया है। 'बिसाती'' कहानी की शीरीं स्वप्न में एक युवक को देखती है। जो पीठ पर सामान लादकर बेचने के लिए घूमता है। शीरीं उसका बोझ कम करना चाहती है।

संक्षेप में प्रसाद ने अपनी कहानियों में अलग – अलग शैलियों का प्रयोग किया है।

१.जयशंकर प्रसाद – आकाश – दीप कहानी संग्रह – पृष्ट क्र. १०
२. वही, पृष्ठ क्र. ५०

४.७ शीर्षक –

कहानी हो या उपन्यास, नाटक, निबंध या कविता हो इनमें सब से महत्त्वपूर्ण उसका शीर्षक होता है। कहानी में शीर्षक के महत्त्व पर डॉ. प्रतापनारायण टंडन कहते है– '' एक पाठक जब किसी कहानी को उठाता है तो सबसे पहले उसकी दृष्टि कहानी के शीर्षक पर पड़ती है। इसलिए कहानी के सभी उपकरणों में प्राथमिक महत्त्व शीर्षक का ही होता है।''१ सभी पाठक शीर्षक पढ़कर ही कहानी की ओर आकर्षित होते हैं। इसप्रकार शीर्षक कहानी का सब से महत्त्वपूर्ण तत्व है। जिस प्रकार नाम से पहचान होती है उसी प्रकार शीर्षक से कहानी की पहचान होती है। शीर्षक के महत्व के बारे में उपेंद्रनाथ अश्क कहते हैं – ''कहानी का शीर्षक उत्तेजक, आकर्षक, मनोरंजक, सांकेतिक तथा प्रेरक होंना चाहिए। ऐसा कि जिसे देखते ही कम – से – कम पठिक कहानी को पढ़ना शुरू करे दें, फिर कहानी के आरंभ पर है कि वह उसे पकड़ ले, विकास पर है कि उसे अपने साथ बहा ले जाय और अंत पर है कि उसे मंत्र – मुग्ध बैठा दे। कहानी अच्छी हो और शीर्षक अच्छा न हो तो वह याद नहीं रहती, यादगार कहानियों के शीर्षक भी यादगार होते हैं।''२ इसप्रकार कहानी में शीर्षक का बड़ा महत्त्व होता है।

४.७.१ शीर्षक का महत्त्व –

कहानी में शीर्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इस बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन कहते हैं कि, ''कहानी का शीर्षक उसके विषयवस्तु, रचनाकाल, घटनास्थल, पात्र अथवा भावना को द्योतन करता है।''३ कहानी के शीर्षक में कहानी का सार होता है। शीर्षक का महत्व बताते हुए भी

---

१. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – हिंदी कहानी कला, पृष्ठ २३४
२. उपेंद्रनाथ भरक – हिंदी कहानी एक अंतरंग परिचय, पृष्ठ २२४
३. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – हिंदी कहानी, पृष्ठ २३५

भालचंद्र गोस्वामी 'प्रखर' बताते है कि, "कहानी यादि फूलो से भरा सरोवर है, तो शीर्षक उन. फूलों से तैयार किया हुआ सुवासित इत्र ।"१ अंत: शीर्षक से ही कहानी का स्वरुप स्पष्ट होता है ।

विवेच्या कहानियों के शीर्षक का मूल्यांकन –

प्रसाद एक सफल रचनाकार हैं । उनकी कहानियाँ श्रेष्ठ कहानियाँ है । कहानी के संदर्भ में डॉ. सुरेंद्र उपाध्याय कहते है – "कहानी यथार्थ की प्रतिच्छबि है, जीवन भी है और जीवन की अनुभव भी । कहानीकार के लिए अनुभवों का सीधा साक्षात्कार आवश्यक है ।" २ प्रसाद के कहानियो के शीर्षक का मूल्यांकन निम्नालिखित है ।

'आकाश दीप' एक प्रेम कहानी है । कहानी की नायिका चम्पा के जीवन पर आधारित कहानी है । चम्पा प्रेम स्विकार नहीं करती बल्की दूसरों की सेवा करना स्वीकार करती है। जैसे दीप खूद जलकर दूसरों का जीवन प्रकाशमय बनाता है, उसी तरह चम्पा अपना जीवन दुसरो की सेवा में बिताती है । इसलिए इस कहानी का शीर्षक 'आकाश दीप' उचित है ।

'ममता' कहानी मे एक विधवा का चित्रण किया है । जिसका नाम ममता है । ममता न चाहते हुए मुगल को आश्रय देती है । भारतीय संस्कृती के अनुसार अतिथी की सेवा करनी चाहिए इसका ममता पालन कर देती है । इसमें ममता का ममत्व से भरा रुप नजर आता है । इसलिये नायिका के नाम पर इस कहानी का शीर्षक रखा है ।

'स्वर्ग की खँडहर में' कहानी में युध्द के बाद होनेवाले बदलाव को चित्रित किया है । हमारी प्राचीन शिल्प कला स्वर्ग जैसी थी और युध्द के बाद वह खंडहर में बदल गयी। इसलिए इस कहानी का शीर्षक 'स्वर्ग के खंडहर मे' रखा गया है ।

---

१. श्री. भालचंद्र गोस्वामी 'प्रखर' कहानी दर्शन पृष्ठ – १५९

२. डॉ. सुरेंद्रनाथ उपाध्याय--कहानी प्रवृत्ती और विश्लेषण पृष्ठ २८७

'सुनहला साँप' कहानी में कहानी के नायक और नायिका साँप पकड़ने का काम करते है । कहानी में सुनहले सॉप का चित्रण किया है जिसे सभी पकड़ना चाहते है। इसी आधार पर कहानी का शीर्षक दिया है ।

'हिमालय का पाथिक' कहानी मे पथिक और किन्नरी के प्रेम का चित्रण किया है । पथिक हिमालय को देखने के लिए आता है । हिमालय वह घूमना चाहता है । इसी आधार पर प्रस्तुत कहानी को 'हिमालय का पथिक' शीर्षक उचित है।

'भिखारिन' कहानी में प्रमुख पात्र का नाम भिखारिन है। वह भिख मांगने का काम करती है । सभी उसका अपमान करते है । भिख मांगने पर भी उसे कुछ नही मिलता है। कहानी की प्रमुख पात्र भिख मांगने का काम करती है, तो उसे भिखारिन कहा जाता है । इससे कहानी का शीर्षक 'भिखारिन' दिया है ।

'प्रतिध्वनी' कहानी में शामा का चित्रण किया है । शामा बेसहारा होती है गरिबी के कारण उसकी आम की बारी निलाम हो जाती है । निलामी के एक – दो – तीन शब्द उसके मन पर गहरा असर करते है । वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है । निलामी के शब्द की प्रतिध्वनि बार – बार उसे सुनाई देती है। इसी प्रतिध्वनि के आधार पर कहानी का शिर्षक 'प्रतिध्वनि' रखा है ।

'कला' यह एक प्रेम कहानी है। प्रस्तुत कहानी की नायिका का नाम कला है । रुपनाथ और रसदेव कला के प्रेमी होते है । नायिका कला के जीवन पर यह कहानी आधारित है, इसलिए इसका शीर्षक 'कला' उचित है ।

'देवदासी' कहानी की नायिका पद्मा है । पद्मा देवदासी होती है । यहा पर पद्मा देवदासी होती है । यहा पर पद्मा के माध्यम से देवदासी प्रथा को चित्रित किया है । प्रस्तुत कहानी मे एक देवदासी का चित्रण होने से इसे 'देवदासी' यही शीर्षत उचित है ।

'समुद्र संतरण' कहानी में एक धीवर–बाला का चित्रण किया है । जो मछली पकड़ने का काम करती है। इसी कारण प्रस्तुत कहानी को 'समुद्र–संतरण' शीर्षक दिया है ।

'वैरागी' कहानी में एक वैरागी का चित्रण किया है। जिसने वैराग का रुप धारण किया है । वैरागी संसार से दूर रहता है । कहानी के प्रमुख पात्र की पहचान वैरागी नाम से होती है। इसलिए कहानी को 'वैरागी' यह शीर्षक रखा है ।

'बनजारा' कहानी में नंदू व्यापार करने का काम करता है । व्यापार के कारण उसे एक गाँव से दूसरे गाँव मे घुमना पड़ता है। ऐसे घुमनेवालों को बनजारे कहते है । प्रस्तुत कहानी में एक बनजारे का चित्रण किया है । इसलिए कहानी को 'बनजारा' शीर्षक दिया है ।

'चूड़ीवाली' कहानी में विलासिनी को चूड़ीवाली कहा गया है। यह घर – घर में जाकर चूड़ीयाँ बेचने का काम करती है। चूड़ीयाँ बेचना उसका व्यवसाय होता है। अपने व्यवसाय से ही वह चूड़ीवाली नाम से पहचाने जाने लगी। चूड़ीवाली के जीवन पर कहानी आधारित होने से 'चूड़ीवाली' यह शीर्षक दिया गया है।

'अपराधी' कहानी में कामिनी नायिका है। कामिनी राला की हवस का शिकार होती है। उसे पुत्र हो जाता है। राजा का बेटा होकर कामिनी का पुत्र अपराधी जैसी जिंदगी जीता है। उसे मृत्यू भी अपराधी जैसी मिलती है। इसलिए इस कहानी को 'अपराधी' यह शीर्षक रखा है।

'प्रणय –चिहन्' यह एक प्रेम कहानी है। इसमे प्रेमी संसार से दूर एकांत में चला जाता है। यह प्रेमी अपनी प्रेमिका से चिहन् पाना चाहता है ताकि उसके सहारे वह अपना जीवन बिताना चाहता है। इसी चिहन् पर यह कहानी आधारित है। इसलिये कहानी को 'प्रणय – चिहन्' शीर्षक उचित है।

'रूप की छाया' कहानी में बाल – विवाह का शिकार हुई सरला के जीवन को चित्रित कया है। सरला शैलनाथ को अपना पति समजती है। लेकिन शैलनाथ उसे स्विकारता नही और वहाँ से चला जाता है। तब सरला के रूप की छाया भी विलीन हो जाती है। कहानी नायिका के जीवन पर आधारित होने से 'रूप की छाया' यह शीर्षक दिया है।

'ज्योतिष्मती' कहानी में एक प्राकृतिक फूल का चित्रण किया है। उस फूल का नाम ज्योतिष्मती होता है। कहानी की नायिका उस फूल को ढूंढ़ती है, जिससे वह अपने पिता की आँखे ठिक करना चाहती है। कहानी में फूल का चित्रण होने से 'ज्यातिष्मती यह शीर्षक उचित है।

'रमला' कहानी भी एक प्रेम कहानी है। कहानी की नायिका का नाम रमला है। रमला एक चंचल लड़की है। कहानी में उसके जीवन पर प्रकाश डाला नायिका रमला के कारण ही कहानी को 'रमला' यह शीर्षक दिया है।

'बिसाती' यह संपूर्ण कहानी बिसाती के इर्द – गिर्द घुमती है। बिसाती इस कहानी का केंद्रीय पात्र है। अत: उसके नाम पर कहानी का शीर्षक दिया गया है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विवेच्य कहानियों के शीर्षक कहानियों के अनुकूल रहे हैं। कुछ कहानियों के शीर्षक कथावस्तु का बोध कराते हैं। तो कुछ शीर्षक पात्रों के नाम से जुड़े हुए होते है। कुछ कहानियों के शीर्षक व्यवसाय से भी जुड़े हुए है। विवेच्य कहानियों के शीर्षक पाठकों को आकर्षित करते है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि हिंदी कथा सम्राट जयशंकर प्रसाद का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। प्रसाद की कहानियाँ समाज और जीवन से जुड़ी हुई

हैं। प्रस्तुत कहानियों में कथानक की दृष्टि से विविधता मिलती है। विवेच्य कहानियाँ कथावस्तु की दृष्टि से सफल रही हैं।

पात्रों का चरित्र – चित्रग करते समय उन्हें विविध रूपों में चित्रित किया है। पात्रों की मानसिकता को भी चित्रित किया है। कहानी के मुख्य पात्रों के साथ – साथ गौण पात्रों को भो चित्रित किया है। गौण पात्र भी कथावस्तु का विकास करने में सहायक हुए हैं। संवादों का भी उचित प्रयोग हुआ है। संवाद कथानक को गतिशील बनाते है और पात्रों चरित्र को उद्‌घाटित करने में सहायक सिध्द होते है। देशकाल तथा वातावरण का चित्रण भी लेखक ने सफलता पूर्वक किया है। प्राकृतिक परिवेश का भी चित्रण मिलता है। जिससे कहानी को आकर्षक बनाया है।

प्रसाद की कहानियों में भाषाशैली की दृष्टि से विविध भाषाओं के शब्दों का प्रयोग मिलता है। इससे कहानियाँ अधिक सफल बनी है। शीर्षक के बारे में कहे तो कहानी का शीर्षक पात्रों के नाम से भी जुड़े हुए है।

विवेच्य कहानियों में स्भी तत्त्वों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। इसीसे स्पष्ट होता है कि विवेच्य कहानियों का शिल्प अत्यंत सुंदर रहा है। इसी कारण कहानियाँ आकर्षक और प्रभावशाली बनी हैं।